P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-5* January- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रेमब्रां की तकनीक एवं माध्यमों की विविधता

Rembrandt's Variety of Techniques and Mediums

Paper Submission: 07/01/2020, Date of Acceptance: 16/01/2020, Date of Publication: 20/01/2020

रोली शुक्ला
(स्वतन्त्र कलाकार)
जानकी पुरम विस्तार, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

रेम्ब्रां वन राइन नीइरलैण्ड के एक महान कलाकार थे जिनका जन्म सन् 1606 में हुआ था। वे अपनी अद्वितीय कला शैली और दर्शको के मन में छायी रहने वाली अपनी अद्विता के लिये प्रसिद्ध हैं। रेम्ब्रां का काम साहित्यिक भावनाओं पर भरा हुआ होता था। उनकी कला में मानवतावाद, भावनात्मक गहराई और व्यक्तित्व की उपस्थिति की एक अलग ही चमक और महत्वपूर्णता लाती थी। उन्होंने बाइबिलियें कथाओं, ऐतिहासिक व्यक्तित्वों और साधारण मानव अनुभवों को अपनी कला के माध्यम से व्यक्त किया।

रेम्ब्रां की कला में प्रकाश और छाया की खिलाफी उपयोग उनकी शैली के अनिवार्य घटक थे। वे अपने चित्रों में छायांकन के माध्यम से व्यक्तित्व के गहराई में प्रवेश करते थे। उनके चित्रों में अर्न्तदृष्टि और अनुभव की भावना सहजता से आती थी। रेम्ब्रां ने अपने दृश्य चित्रों के विषय में ज्यादातर पेड़, खेत, नदी एवं झोपड़ी आदि का चित्रण किया है।

रेम्ब्रां की अद्वितीयता उनके कला के माध्यम से उनकी अनुभवों और विचारों को व्यक्त करने में समाहित है। उनके चित्रों में उत्सव और दुःख, साहस और भय, प्रेम और विरह के अनंत संवाद है, जो दर्शक को उनके समय की मानव अनुभूतियों के साथ जोड़ते हैं।

रेम्ब्रां ने अपनी कला से सच्चाई और व्यक्तित्व की गहराई को प्रस्तुत किया। उनके समय के मानवीय अनुभवों का एक सच्चा प्रतिनिधित्व था और इसके कारण उन्हें चित्राकला के महान कलाकारों में गिना जाता है।

Rembrandt Van Rhine was a great artist from Netherlands who was born in 1606. He is famous for his unique art style and his uniqueness which remains in the minds of the audience. Rembrandt's work was filled with literary sentiments. The humanism, emotional depth and presence of personality in his art brought a different shine and importance. He expressed biblical stories, historical figures, and ordinary human experiences through his art.

Rembrandt's contrasting use of light and shadow in his art was an essential component of his style. He used to enter into the depth of personality through cinematography in his paintings. The feeling of insight and experience came easily in his paintings. In his visual paintings, Rembrandt has mostly depicted trees, fields, rivers and huts etc.

Rembrandt's uniqueness lies in his ability to express his experiences and thoughts through his art. His paintings contain infinite dialogues of celebration and sorrow, courage and fear, love and separation, connecting the viewer with the human experiences of his time.

Rembrandt presented truth and depth of personality through his art. He was a true representation of the human experiences of his time and because of this he is counted among the great artists of painting.

मुख्य शब्द : सास्कृतिक धरोहर, मन्दिर, पंचबद्री, पंचकेदार, पंचप्रयाग।।

Keyword: Cultural heritage, Temples, Panch Badri, Panchkedar, Panchprayag.

प्रस्तावना

रेमब्रां बारोक शैली का कलाकार थे, अतः रेमब्रां बारोक शैली से प्रभावित होकर कार्य किया। बारोक शैली के कलाकार सत्य तथा असत्य में भेद न करने वाली, तर्क रहित एवं परस्पर

विरोधी विचारधारा के थे। इसी विचारधारा के प्रभाव से प्रभावित होकर रेमब्रां ने बहुत ही प्रचुर मात्रा में कृतियों का आकलन किया।

रेमब्रां ने अपने चित्रों में प्रकाश को मुख्य विषय के आधार पर माना है। इसलिए अपने प्रमुख विषयों में व्यक्ति चित्र, सामाजिक चित्र एवं दृष्य चित्र को बहुत ही सुन्दर एवं सजीव ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। रेमब्रां ने अपने व्यक्ति चित्रों में अपनी प्रमिका पत्नी सस्किया, बेटे टीटस, माता पिता एवं स्वयं अपने बहुत सारे व्यक्ति चित्र को बनाया है। रेमब्रां ने शुरू में अपनी चित्रकारी व्यक्ति चित्रों से प्रारम्भ की थी। रेम्ब्रां के संयोजन एवं दृश्य चित्रों में बड़ी भिन्नता है। इन्होंने अपने संयोजन में काल्पनिक मानवाकृतियों को अधिकांशतः लिया है एवं अपने प्रकाश को सर्वदा कोणीय रूप में दिखाया है जिसमें संयोजन में नाटकीयता का आभास परिलक्षित होता है। आपके संयोजन को देखकर लगता है कि आपने अपने विषय को कभी - कभी सीधा नहीं देखा, लेकिन ठीक इसके विपरीत आपके अपने दृष्य-चित्रों को जैसा देखा वैसा हू-बहू उतार दिया। बहुत से दृष्य चित्र अमलांकन (Etching) पद्धति द्वारा निर्मित है। रेमब्रां ने अपने चित्रों को बहुत ही महीन व परिष्कृत रेखाओं एवं छाया प्रकाश के माध्यम से बनाया है। रेमब्रां को छाया एवं प्रकाश का मास्टर कहा गया है। चित्रों मे छाया प्रकाश, रंग का अपना ढाँचा, समय और विस्तार, रंगों की लयात्मकता, मनोवैज्ञानिक और आध्यत्मिक अभिव्यक्ति - सभी के सम्बन्ध में प्रयोग किये है। रेमब्रां ने अपने चित्रों के मुख्य विषय पर ही प्रकाश का प्रयोग किया तथा बाकी भाग को छाया में दिखया है, जिससे मुख्य - विषय उभरकर सामने आ जाता है और अन्य मुख्य विषय के महत्व को कम नहीं करता।

रेमब्रां के जीवन में अनेक उतार - चढ़ाव आए लेकिन वह अपनी चित्रकारी की क्रिया में थोड़ा भी विचलित नही हुए व निरन्तर आगे की ओर बढ़ते गये। रेमब्रां की कार्य - पद्धति कई तरह की थी उसने पेन्टिग के अलावा एचिंग की तकनीक के प्रादुर्भाव में नई तकनीक का आयाम देकर आगे आने वाली पीढ़ी के मार्ग दर्शक का कार्य किया है।

रेमब्रां ने तीन प्रकार के चित्र बनाये - उत्कीर्ण चित्र, वर्ण चित्र तथा रेखाचित्र, उनके उत्कीर्ण चित्र सबसे लोकप्रिय है। उनमें उनकी भावनाओं की सफल अभिव्यक्ति हुई है। उनकी रचना उन्होने इसी उद्देश्य से की थी कि समसज के अधिक से अधिक व्यक्तियों तक उसका संदेश पहुँच सके। ये उत्कीर्ण चित्र प्रत्येक चित्र की असंख्य प्रतियाँ तैयार करने के उद्देश्य से बनाये गये थे। उनके रेखाचित्र निजी प्रयोग अथवा किसी साथी कलाकार के हेतु बनाये गये थे। वर्ण चित्र (Painting) को समझने में लोगों ने भूल की उनकी भावनाएं ठीक प्रकार से समझी न जा सकी। जीवन में उन्हें प्रशंसा नहीं मिली किन्तु आज उनके गुण गाते हुए कलाविदों की वाणी नहीं थकती।

दूसरे की नकल करने वाले चित्रकारों तथा शिल्पों में रेमब्रां की कला शीघ्र ही लोकप्रिय हो गयी। उनके शिल्पों में दो कलाकारों के नाम प्रमुख हैः - लिक तथा गेल्डर पर आगे चलकर वरमीअर का भी प्रभाव पड़ा था। दैनिक जीवन के लघु चित्रों का प्रचार हार्टस से प्रभावित कलाकारों में अधिक हुआ। इनमें घर के विभिन्न द्वारों तथा खिड़कियों से आने वाले प्रकाश का सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत किया जाने लगा। यह प्रवृत्ति हालैण्ड ही नहीं, फलाण्डर्स में भी बहुत लोकप्रिय थी। इन कलाकारों ने जो प्राकृतिक वादी प्रवृत्ति अपनाई थी उसके कारण प्राचीन परम्पराओं को नहीं त्यागा गया और लघु - चित्रण का मुख्य उद्देश्य तत्कालीन जीवन के परिचयात्मक चित्र उपस्थित करना ही रहा। इन समस्त कलाकारों में वरमीअर ही ऐसे थे जो कलात्मकता की दृष्टि से बहुत ऊँची उड़ान भर सके।

कार्य तकनीक - रेमब्रां की कार्य तकनीक तीन प्रकार की थी-

1. वर्ण चित्र (Painting)
2. अमूलांकन चित्र (Etching)
3. रेखा चित्र (Drawing)

1. वर्ण चित्र (Painting)- रेमब्रां के वर्ण चित्र की तकनीक बहुत ही सुन्दर है। इसने अपने चित्रों में चटक एवं साफ (Fresh) रंगों का प्रयोग किया है। छाया एवं प्रकाश का प्रयोग बहुत ही अच्छे ढ़ंग से किया एवं प्रकाश का प्रयोग तो अपने विषय के मुख्य भाग पर ही दर्शाया है। आप किसी भी चित्र को सामने से बहुत की कम बनाया, ज्यादातर चित्रों को तिरछा बनाया। व्यक्ति चित्र ज्यादातर तीन चश्म (Three Fourth Face) है, कुछ एक को सामने से बनाया है। इसी तरह से आप अपने संयोजनों को भी कोणीय बनाया है, किसी भी संयोजन में प्रकाश को सीधा नहीं दिखाया है। आपने संयोजनों में बहुत ही उथल - पुथल दिखायी देती है। कहने का तात्पर्य यह है कि "किसी विषय को दिखाने में बहुत ही तीव्र उत्कृष्ट तूलिका के घातों का प्रयोग किया है, जिससे विषय में गति आ जाती थी, लेकिन ठीक इसके विपरीत अपने दृष्य चित्रों को स्पाट पर ही बैठकर जैसा देखा वैसा बनाया" इसके कार्य करने की तकनीक अपने समय के कलाकारों से बिल्कुल भिन्न थी। आप छाया-प्रकाश एवं रेखाओं का बहुत ही गहनता से अध्ययन कर अपनी अंतरतम् अभिव्यक्ति के द्वारा प्रस्तुतीकरण किया। यदि आप अपने चित्रों में ज्यादातर येलोओकर, लेमन येलो, क्रिमशन रेड, ब्रन्ट अम्बर, सेप ग्रीन, परिसियन ब्लू, सेरोलियन ब्लू एवं कोबाल्ट ब्लू रंगों का प्रयोग किया है। यही सब आपके चित्रों के कौशल की प्रमुख विशेषता रही। आप वर्ण-चित्रों में "रात्रि का प्रहरी" (दि नाइट वाच), (चित्र संख्या-55) बहुत ही प्रसिद्ध चित्र है।

2. अमूलांकन चित्र (Etching)- रेमब्रां के इनग्रेविंग कार्यो ने ग्राफिक आर्ट के इतिहास को बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। हम यह भी कह सकते है कि यूरोपियन छाया चित्र विधि के प्रादुर्भाव में रेमब्रां के इनग्रेविंग तकनीक को मार्ग-दर्शक माना जाता जा सकता है। रेमब्रां ने अम्ल लेखन के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है, क्योंकि उस समय इस तकनीक पर प्रभावशाली कार्य नही हुए, लेकिन रेमब्रां ने एचिंग तकनीक द्वारा कला को विस्तृत आयाम दिया।

इनके कार्यो में अलंकरण से पूर्ण कार्यो को प्रोत्साहन नहीं मिला बल्कि माननीय अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है। इनके कार्य जिलोग्रीफी (Xylography) इनग्रेविंग के कार्य से चारित्रिक गुणों द्वारा भिन्नता लिये हुए है। रेमब्रां ने अपने एचिंग पद्धति से बने चित्रों में इनग्रेविंग कार्योको बड़ी ही सूक्ष्मता से दर्शाया है। इसने अपने एचिंग पद्धति से बने कार्यो में प्रकाश के विभिन्न विभाजन (Gradation of Light) द्वारा किसी चित्र में छाया एवं प्रकाश के भाव को सरलता से दर्शाया है। इस कारण इसमें टोनल विविधता (Tonal Variation) परिलक्षित होती है। रेमब्रां के छाया एवं प्रकाश का प्रयोग इसके तैल चित्रों में भी देखा जा सकता है। उसके अनेक महत्वपूर्ण अम्लांकन भी इसी अवधि के है, जिसमें तीन वृक्ष (चित्र संख्या -95) (The Three Trees) विशेष उल्लेखनीय है।

इनके एचिंग (Etching) के कार्यों में वेरायटी ऑफ स्ट्रोक (Veriety of Stroke) भी है। इनके कार्यो में आकार पृष्ठभूमि के विपरीत विभिन्न सतहों में भिन्नता के आधार पर प्रत्यक्ष महसूस कर सकते है। रेमब्रां ने अपने एचिंग की कृतियों में प्रकृति के लयात्मक - प्रवाह को दर्शाया गया है। इन्होने स्वीकार किया है कि "मैने एचिंग के कार्यों को प्रायोगिक दृष्टि के तहत ही निर्मित किया है, जिसमें प्रकृति के उत्पादानों को लेने का कारण, विभिन्न आकारों एवं आकृतियों में सादृश्यता कायम करना है"। तकनीक दृष्टि से टोनल गति को

जाहिर करने में इन्होंने ग्रोटस्क (Grotestue) कला के शिष्टाचार को अपनाया है इनहोने जैकस- कैलोट के विचारों को तथा तकनीकी प्रयोगात्मकता हरक्यूलिस सिगर्स (Hercules Seghers) से ली है। इनके इनग्रेविंग के कार्यों में फाईन निडिल से पतली लाइनें बनाते हुए बहुत ही लयात्मक कार्य किए, जिसमें इन्होने प्रकाश एवं छाया के विपरीतार्थक बोध को दर्शाया है।

रेम्ब्रां ने अपने व्यक्तिगत एचिंग शैली को एकाएक प्राप्त नहीं किया, बल्कि बेगर्स (Beggars) के विभिन्न एचिंग पद्धति के चित्र बनाए जो अनके कार्यों में निरन्तर प्रगति को दर्शाते हैं। रेम्ब्रां ने अपने चित्रों में लयात्मक तथा प्रवाहमय रेखाओं तथा तीक्ष्ण विरोधाभासी छाया एवं प्रकाश के द्वारा चित्रों में प्रकृति तथा मानवीय आकारों में नाटकीयता तथा आपसी समबन्ध को दर्शाया है। इनके व्यक्ति चित्रों में चेहरे के विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति करने के लिए तार्किक-स्थिति को अधिक महत्व मिला है। कहने का तात्पर्य यह है कि "आकृतियों के चेहरे उनके स्वयं के आन्तरिक संघर्ष की भावना को अभिव्यक्ति करने में सफल हुए"। तकनीक की दृष्टि से रेम्ब्रां ने किसी भी प्रारम्भिक कठिनाइयों को दर्शया है। आकृतियों के वाह्य आकारों को रेखाओं द्वारा बाँधने के लिए उन्होनें सशक्त रेखाओं का प्रयोग किया है। इन्होने क्षैतिजिक तथा वर्तुलाकार (Vertical) रिक्त स्थानों को भी महत्व दिया है।

रेम्ब्रां ने कोणीय प्रकाश को ज्यादा महत्व दिया। इनके चित्रों को आकृतियों तथा प्रकृति के ऊपर पडती प्रकाश के किरणों (Light) किसी एक माध्यम से फोटोग्राफी में प्रयोग होने वाले प्रकाश के माध्यमों के समान प्रकाश का विस्तार किया।

रेम्ब्रां अपने एचिंग (Etching) चित्रों में लाइन के द्वारा बहुत ही गहराई दिखायी है। निकोलाई सेमिनोविच मोसोलो का विचार था कि रेम्ब्रां वास्तविक रूप से एचिंग पद्धति के चित्रकार थे। जिन्होंने एचिंग पद्धति को विश्व में स्थापित किया है।

3. रेखा चित्रः (Drawing)- रेम्ब्रां के रेखा चित्र भी बहुत सशक्त थे। आपनें एचिंग पद्धति एवं पेंट्रिग की तरह रेखा चित्र को बहुत ही गहनता से तेज एवं फाइन बनाया है।रेम्ब्रा ने रेखा चित्रों को बनाने में कई तरह की पद्धति की प्रयोग किया है। जैसे-ब्लैक, रेड, चाक, पेंसिल, निडिल एवं कलर के माध्यमों का प्रयोग कर रेखा चित्रों में जान डाल दिया है। अपने रेखा चित्रों में भी भावों का प्रयोग कहीं कहीं पर लाइन के द्वारा व्यक्त किया है। आप कुछ रेखा चित्रों को केवल तेज,सुंन्दर एवं फाइन रेखाओं द्वारा तथा कुछ रेखा चित्रों को लाइन के छाया एवं प्रकाश के द्वारा दिखाया है। इस तरह हम कह सकते हैं कि रेम्ब्रां की कार्य तकनीक बहुत ही सशक्त थी। आप अपने कार्य तकनीक में कई तरह की चित्रों की पद्धति का प्रयोग कर आने वाले समय के लिए सहनतम् आयाम प्रस्तुत कर प्रशस्त किया।

मुख्य पाठ

रेम्ब्रां ने अपने चित्रों एवं एचिंग कार्यों के विषय को कई तरह से दर्शया है। जिनमें व्यक्ति-चित्र,सामाजिक चित्र, धार्मिक एवं दृश्य-चित्र मुख्य रूप से हैं।

रेम्ब्रां ने सर्वप्रथम अपने व्यक्ति चित्रों में कुछ न कुछ भाव अवश्य दिखाया है,जिसमें किसी भी व्यक्ति के चित्र को स्थित नहीं दिखाया है बल्कि उसमें गति है। रेम्ब्रां ने अपने व्यक्ति चित्रों में मुस्कराहट नहीं दिखाई, बल्कि दुख दर्द एवं किसी सोचनीय उलझन को ही अपनी अभिव्यति द्वारा परिलाक्षित किया है। इन्होंने केवल एक व्यक्ति चित्र जिसमें अपने को अपनी प्रेमिका पत्नी सास्किया के साथ भोजन करते हुए दर्शाया है, इसी व्यक्ति चित्र में रेम्ब्रां ने अपने को प्रफुल्ल मुद्रा में दर्शाया है। अन्य किसी भी व्यक्ति चित्र में प्रसन्नता नहीं

दिखया, बल्कि दुःख एवं भावनीय मुद्राओं का अंकन किया है। रेम्ब्रां ने अपने व्यक्ति चित्र के अलावा अपनी पत्नी, माता, पिता, पुत्र एवं कई प्रसिद्ध व्यक्तियों को व्यक्ति चित्रों का बनाया हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि रेम्ब्रां ने अपने व्यक्ति चित्रों में बहुत ही गहनता से मनुष्य के अन्तरम् भावों को अपनी अभिव्यक्ति के द्वारा निकाल कर रख दिया है।

रेम्ब्रां ने अपने सामाजिक चित्रों के विषयों में केवल दुःख दर्द ही दिखया है। इसनें सामाजिक विषयों में मुख्य रूप से निम्न वर्ग के लोंगों का ही चित्रण किया है। जैसेः- अंधा, लंगडा, एवं भिखारी इत्यादि तरह के सामाजिक विषयों को ही लिया है। आप अपने एचिंग पद्धति मंे भिखारी बहुत ही फाइन लाल द्वारा प्रयोग कर दर्शाया है। इसने अपने जीवन में बहुत ही उतार चढाव देखा, इसलिए इसने अपने सामाजिक चित्रों के विषय में दुःख दर्द का विषय चुना। कहने का तात्पर्य यह है कि रेम्ब्रां ने अपने सामाजिक विषय में दुःख दर्द को इसलिए चुना क्योंकि उसने दुःख दर्द को अपनी अर्न्तआत्मा से जाना था, उसके बीच में रहा और झेला था, इसलिए अपने सामाजिक विषयों के चुनाव में दुःख दर्द से ही सम्बन्धित विषयों को अपने चित्रों एवं एचिंग पद्धति के माध्यम से प्रस्तुत किया। इसने इस समय बहुत एगेंरविंग बनाये जिन्हें उसने बडें स्तर पर बेचा तथा सम्मान प्राप्त किया।

रेम्ब्रां ने अपने धार्मिक चित्रों के बिषयों में बाइबिल, आदम-हउसा से ही सम्बन्धित विषयों में प्रभु ईसा के ज्यादातर चित्रों का निर्माण किया है। आप ईसा के साथ कुछ मानवाकृतियों भक्तगण एवं दृश्य चित्रों का भी अंकन किया है। तथा रेम्ब्रां ने ईसा मसीह को कहीं पर अपने भक्तगण को उपदेश देते हुए एवं भोजन करते हुए शान्त मुद्रा में दिखाया है। इन सभी विषयों के साथ ही रेम्ब्रां ने ईसा एवं अन्य आदमियों के वस्त्रों, वेशभूषा, आचरण तथा मुद्रा का अंकन भी अपने विषय का मुख्य अंक मानकर बडे ही सूक्ष्मता एवं गहनता के साथ अध्ययन कर, छाया एवं प्रकाश का प्रयोग कर उसका प्रस्तुतीकरण किया है। आत्म चित्रों तथा माता पिता के चित्रों के अतिरिक्त रेम्ब्रां ने बाइबिल के कथनाकारों को भी रूपांत्रित किया। रेम्ब्रां ने अपने चित्रों के बिषय में आदम-ईब का भी चित्रण किया है तथा आदम-ईब को नग्नावस्था में दिखाया है। इस बिषय के साथ दृश्य चित्रों का भी प्रयोग बडे ही अच्छे ढंग से दिखाया है जिससे लगता है कि जैसे स्वर्ग का दृश्य प्रस्तुत हो गया है। इसने अपने इन विषयों में आध्यात्मिकता का भरपूर प्रयोग किया है। कहने का तात्पर्य है कि - रेम्ब्रां के इन धार्मिक एवं आध्यात्मिक चित्रों का माध्यम से मानव अनुभूतियों की गहराईयों में उतरने वाला नहीं दिखाई देता।

रेम्ब्रां ने अपने दृश्य चित्रों के विषय में ज्यादातर पेड, खेत, नदी एवं झोपड़ी आदि का चित्रण किया है। अपने दृश्य चित्रों को स्पाट पर बनाया, कुछ एक दृश्य चित्रों को अपने चित्रशाला में बनाया है। आप दृश्य चित्रों में ज्यादातर गांव का दृश्य इसलिए बनाया है, क्योंकि रेम्ब्रां ने ज्यादातर दुःख दर्द एवं शान्त जीवन व्यतीत किया था। इसके दृश्य चित्रों में भी कुछ न कुछ भाव परिलक्षित होता है। कहने का तात्पर्य है कि रेम्ब्रां ने अपने दृश्य चित्रों में रंगों एवं तूलिकाओं के माध्यम और छाया प्रकाश के समन्वय से चित्रों में गहराई को दर्शाया है । रेम्ब्रां के द्वारा पहले बनाये गये चित्रों को घ्यान में रखकर दूसरे चित्रों में परिर्वतन का अवलोकन किया जाय तो यह कलाकार आत्मा के परिर्वतन का ज्वलन्त उदाहरण है।

रेम्ब्रां ने मानवाकृतियों की शारीरिक भौतिकता से चित्रण का आरम्भ किया था, किन्तु धीरे धीरे उन पर पडने वाले प्रकाश में ही वे अधिक रूचि लेने लगे जिस प्रकार यूनानी कलाकारों के लिए मानव शरीर ही परम् सत्य था, उसी प्रकार रेम्ब्रां के लिए प्रकाश ही भौतिक सृष्टि का परम् सत्य था उसी के द्वारा उसने अपनी अनुभूतियों को व्यक्त किया है। कहने का

तात्पर्य यह है कि - रेम्ब्रां की अन्तिम कृतियों का विषय प्रकाश ही है। मिल्टन ने कहा था कि- Since light so necessary is to life and almost life it self, to be true that light is in the soul.

मिल्टन की यह उक्ति जितनी रेम्ब्रां की कृतियों में चरितार्थ होती है, उतनी किसी भी कलाकार की कृतियों में नहीं। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल प्रकाश के ही आधार पर रेम्ब्रां की कृतियों का अध्ययन किया जाना चाहिए। प्रकाश उनका प्रमुख तत्व है, लेकिन तत्व भी मुख्य विषय है जैसे मुद्राएं, व्यंग्यात्मक रेखाएं, भावपूर्ण आकृतियों, रंगों और रेखाओं की लयात्मकता जिनके द्वारा कलाकार ने मानवीय मनोंविकारों को व्यक्त किया है। परन्तु इस सबसे अतिरिक्त रेम्ब्रां ने छाया एवं प्रकाश को अपने मन शक्ति द्वारा अभिव्यक्त कर विषय को प्रमुख माना है।

रंग संयोजनः-

रंगों का संगीत तूलिका का नृत्य और प्रकाश का अभिनव रेम्ब्रां के चित्रों से भरपूर देखने को मिलता है। इसने अपने चित्रों में रंगों का संयोजन विषय के आधार पर किया है। इसके रंग संयोजन का कुछ विशेष अर्थ होता था। जैसेः-किसी भी विषय को दिखाने में रेम्ब्रां ने मुख्य विषय को अन्दर से बाहर अपने रंग संयोजन द्वारा दिखया है। कहने का तात्पर्य यह है कि - मुख्य भाग पर प्रकाश डालकर अन्य भाग को अन्धकार में कर दिया है, जिससे मुख्य विषय उभर कर सामने आ गया है।

रेम्ब्रां ने अपने रंगों में येलो ओकर, गैम्बोज येलो, क्रिम्सन रेड, ब्रन्ट साइना, ब्रन्ट अम्बर, सेप ग्रीन परिसियन ब्लू, सेरोलियन ब्लू एवं कोवाल्ट ब्लू आदि रंगों का प्रयोग किया है। इन्होंने चटक एवं मनमोहक रंगों द्वारा अपनी अनूभूतियों से अपने चित्रों में गहराई और भाव को परिलाक्षित किया है। इन्होंने अपने चित्रों की मानवाकृतियों में चेहरे के उपर ज्यादातर हल्के रंग का ही प्रयोग किया है कपडों के रंगों में क्रिमसन रेड एवं सेप ग्रीन की पृष्ठ भूमी में कुछ हल्के येलो, ग्रीन ब्रन्ट, साइना ब्रन्ट, अम्बर एवं धुधले रंगों का तथा आकाश को सेप ग्रीन, परिसियन ब्लू, एवं कोवाल्ट ब्लू, येलो एवं रेड रंगों द्वारा दिखया गया है। चित्र के मुख्य भाग पर प्रकाश का प्रयोग किया है। लेकिन इसके बाबजूद रेम्ब्रां ने अपने रंग संयोजन के द्वारा चित्र को बांधने में सफलता प्राप्त की है रेम्ब्रां अपने चित्रों में रूप एवं स्वरूप के आधार पर रंगों का संयोजन करता था इसने रंग संयोजन के द्वारा आकारों में विविधता को दर्शाया है। इसने रंग संयोजन के द्वारा चेहरे तथा कपडे के घनत्व एवं छाया प्रकाश को नाटकियता से संयोजित किया है।

रेम्ब्रां ने अपने अपने रंग संयोजन के द्वारा छाया एवं प्रकाश का प्रयोग दो विरोधाभासी तत्वों में समानता के लिए संघर्ष को व्यक्त करता है।

प्रकाश जहाँ एक ओर अंधेरापन कम करता है, वहीं अंधेरा भी प्रकाश को महत्वहीन बना देता है। इस तरह से रेम्ब्रां ने अपने चित्रों के रंग संयोजन में बड़े ही आन्तिरिक मनोभावों की अभिव्यक्ति के द्वारा चित्रों को गहनता के साथ दर्शाया है।

संयोजन का छन्दः-

संयोजन का छन्द का मतलब संयोजन के लय से है। रेम्ब्रां ने अपने संयोजन में लयात्मकता को बहुत ही सूक्ष्मता से दर्शाया है। इन्होने ब्रश एवं निडिल के द्वारा धातों एवं रेखाओं से अपने चित्रों में हलचल पैदा की है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन्होने अपने चित्रों में गति लाने की भरपूर कोशिश की है, और उसमें सफलता भी प्राप्त की है।

रेम्ब्रां की अन्तरात्मा में जो उथल-पुथल थी, उसी को अपनी अन्तरात्म् अभिव्यक्ति द्वारा अपने चित्रों में लयात्मकता को दर्शाया है। आपने अपने दृश्य चित्रों के पेड़ों को बहुत ही तीव्र रेखा के द्वारा संयोजन में लयात्मता को दिखाया है।

निष्कर्ष

इसी तरह से अपने द्वारा बनाए गये व्यक्ति चित्रों में संयोजन की लयात्मकता के द्वारा मानव की अनुभूतियों की अन्तरात्म् अभिव्यक्ति गहराई से आपने दर्शाया है। जिसके दर्शकगण देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। रेम्ब्रां ने अपने सभी विषयों में संयोजन की लयात्मकता को बहुत ही गहनता से दर्शाकर अपने चित्रों में गति-प्रवाह को प्रधानता दी है। रेम्ब्रां के चित्रों के संयोजन में लय को देखकर लगता हैकि रेम्ब्रां का जीवन आध्यात्म एवं लयात्मकता से परिपूर्ण था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली पृ0-38।
2. आधुनिक भारतीय चित्रकला, जी0के0 अग्रवाल, पृ0-102।
3. साहित्य सम्मेलन, डा0 सतीश चन्द्र, कला, आधुलिक भारतीय चित्रकला पृ0-133।
4. पश्चिम की चित्रकला, अशोक, ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़ पृ0-191।
5. सेमिनार पत्र 2002, रोली शुक्ला, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ।
6. सेमिनार पत्र 2002, रोली शुक्ला, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ।
7. सेमिनार पत्र 2002, रोली शुक्ला, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ।
8. पश्चिम की चित्रकला, अशोक, ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़ पृ0-190।
9. पाश्चात्य कला, डॉ0 ममता चतुर्वेदी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ0-144।
10. पश्चिम की चित्रकला, अशोक, ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़ पृ0-188।
11. सेमिनार पत्र 2002, रोली शुक्ला, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ।